मध्य रेल की अर्धवार्षिक पत्रिका

अंक 10 अप्रैल से सितंबर, 2013

रेल सुरभि

www.cr.indianrailways.gov.in/हमारे बारे में/मुख्यालय/राजभाषा तथा 10.31.2.22/राजभाषा पर भी उपलब्ध

इस अंक में

संरक्षक

बी.पी खरे

महाप्रबंधक

परामर्शदाता

आर.डी. त्रिपाठी

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य परिचालन प्रबंधक

प्रधान संपादक

पारस नाथ शर्मा

उप महाप्रबंधक/रा.भा.

संपादक

आशा मिश्रा

राजभाषा अधिकारी

उप संपादक

आर.एस. माथुर

वरिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

साधना यादव

वरिष्ठ अनुवादक

एस.एन.पाण्डेय

वरिष्ठ अनुवादक

सुधीर शिल्लेदार

वरिष्ठ अनुवादक

गिरीष चितले

कनिष्ठ अनुवादक

क्र.	रचना/लेख/कविता का शीर्षक	विधा	रचनाकार/लेखक का नाम सर्वश्री	पृष्ठ संख्या
1.	डीजल इंजन के पुर्जों का एनडीटी परीक्षण	लेख	के.एम. काले	3
2.	समरस (ग्रीष्मकालीन भीड़)	कविता	वी.कु. यादव	4
3.	आधी-अधूरी अनकही नज्में	कविता	विजय गौतम	8
4.	तरूणी की सगाई	कविता	पी.डी. तिवारी (संदेश)	9
5.	खुशी और सफलता	कविता	संजय वि. रानड़े	10
6.	वर्णक्रम लेखी विश्लेषक (स्पेक्ट्रोमीटर)का धात्विक परीक्षण में महत्व	लेख	बी.डी. हेडाउ	11
7.	घरोंदा, तलाश	कविता	अशोक ई. जोहरे (साहिल)	13
8.	क्षमता	कविता	रामचरण यादव "याददाश्त"	14
9.	रेल इंजन (डब्ल्यूडीएस6)	कविता	श्याम सुंदर त्रिपाठी	15
10.	दुखी हवा का झोंका	कविता	श्रीराम एम. बरेठा	16

संपर्क सूत्र

राजभाषा विभाग, महाप्रबंधक कार्यालय, मध्य रेल, मुंबई छशिट

दूरभाष : 54753, 54, 56, 68 (रेल)/022-22697123

फैक्स : 54756/022-22697123

ई-मेल: railsurabhi@rediffmail.com

सहयोग **सुनील विष्णु उदंड** मुख्य टंकक **संगीता मिश्रा** कनिष्ठ लिपिक

पत्रिका में संकलित सभी विचार लेखकों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार, रेल मंत्रालय या रेल के विचार न समझे जाएं।

मुख पृष्ठ छाया चित्र 1

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 141 वीं बैठक में महाप्रबंधक,मध्य रेल श्री बी.पी. खरे का पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री आर.डी. त्रिपाठी,

मुख पृष्ठ छाया चित्र 2

रेल सुरभि के अंक 9 का विमोचन करते हुए महाप्रबंधक मध्य रेल श्री बी.पी. खरे साथ में बाएं से मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री आर.डी. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक/राजभाषा श्री पारस नाथ शर्मा तथा तत्कालीन मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं अपर महाप्रबंधक श्री विद्युत के. प्रधान।

डीजल इंजन के पुर्जों का एन.डी.टी. परीक्षण

के.एम.काले

मध्य रेल लोको कारखाना परेल में मुख्यत: डब्ल्यूडीएम$_2$ (WDM$_2$) डीजल इंजनों की मरम्मत, पीओएच (Periodical Overhauling) एवं डब्ल्यूडीजी$_{3ए}$ (WDG$_{3A}$) डब्ल्यूडीजी$_{3डी}$ (WDG$_{3डी}$) डब्ल्यूडीएस$_6$ (WDS$_6$) जैसे लोको का निर्माण कार्य होता है साथ ही छोटी लाइन के इंजन एनडीएम$_1$, एनडीएम$_5$ एवं जेडडीएम$_1$ की मरम्मत एवं निर्माण किया जाता है ।

डीजल लोको के पीओएच के दौरान अधिकतम पुर्जों की एनडीटी पद्धति (Non. Destructive Testing method) द्वारा जांच की जाती है । इस परीक्षण पद्धति में सभी पुर्जों को बिना क्षति पहुचाते हुए परीक्षण किया जाता है । एनडीटी परीक्षण पद्धति के कारण दुर्घटना होने की संभावना कम हो जाती है एवं रेल संपत्ति की सुरक्षा एवं मानव जीवन की संरक्षा होती है । कहावत है एक परहेज सौ इलाज के बराबर है (Prevention is better than cure) । एनडीटी परीक्षण का कार्य रासायनिक एवं धातुकर्मिक प्रयोगशाला के कर्मचारियों द्वारा नियमित और समय पर किया जाता है।एनडीटी परीक्षण पद्धतियां निम्न प्रकार की होती है :-

1	रंजक भेदन परीक्षण (डीपीटी)Dye Penetrate Testing
2	झायग्लो परीक्षण Zyglo Testing
3	चुंबकीय कण परीक्षण Magnetic Porticle testing
4	पराश्रव्य परीक्षण (यूएसटी) Ultrasonic Testing
5	एक्स रे X-ray

रंजक भेदन परीक्षण एवं झायग्लो परीक्षण पद्धति से सभी धातु एवं अधातु से बनाए गए पुर्जों की उपरी सतह के क्रेक का पता लगता है । इस पद्धति से मेनक्रेक शॉफ्ट, बोगी फेम के वेल्डेड जाइंटस, रोटर असेंब्ली, एग्झास्ट मेनीफोल्ड, ल्यूब ऑयल फिल्टर ड्रम, रेडिएटर कंपार्टमेंट एवं एक्सप्रेशर वेल एरिया के वेल्डेडजाईण्टस, एक्सप्रेशर क्रेंक शाफ्ट तथा अन्य पुर्जों का परीक्षण किया जाता है । झायग्लो परीक्षण द्वारा पिस्टन, स्प्रिंग, वाल्व एवं रोलर बियरिंग की जांच की जाती है ।

चुंबकीय कण परीक्षण पद्धति से केवल फेरोमैग्नेटीक मटेरियल का परीक्षण किया जाता है। इस परीक्षण पद्धति से उपरी सतह एवं निचली सतह के क्रेक का पता लगता है । इस पद्धति से मेन क्रेंक शाफ्ट पिनियन, टीजी गियर, आयडलर एवं ड्रायव गियर, कनेक्टिंग रॉड्स, अल्टरनेटर शॉफ्ट तथा अन्य पुर्जों का परीक्षण किया जाता है ।

भारतीय रेल में धातु से बनाए गए कलपुर्जे की आंतरिक जांच के लिए पराश्रव्य परीक्षण पद्धति सर्वथा उपयुक्त है । इस परीक्षण पद्धति से उपरी सतह, निचली सतह एवं पुर्जे की आंतरिक क्रेक का पता लगता है । इस परीक्षण पद्धति में पुर्जे में क्रेक के स्थान की जानकारी मिलती है। इस परीक्षण पद्धति से धुरा (Axle) पहिया (Wheel) योक गाईड पिस्टन पिन, ब्रास बियरिंग एवं आर्मेचर शाफ्ट का परीक्षण किया जाता है । इस पद्धति से 10 मीटर तक लंबे पुर्जों का परीक्षण होता है।

एक्स-रे परीक्षण पद्धति का उपयोग वेल्डेड जाइंण्टस की खराबी एवं आंतरिक क्रेक को ढूंढने में किया जाता है । वेल्डरों की गुणवत्ता जांचने के लिए इस पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

उपर्युक्त दर्शायी गई एनडीटी परीक्षण पद्धति का इस्तेमाल करने से रेल इंजन की गुणवत्ता एवं कार्य क्षमता बरकरार रखने में सहायता मिलती है और रेल यातायात सुचारू रूप से चलता है ।

रासायनिक एवं धातुकर्मिक अधीक्षक
उप मुख्य रासायनिक एवं धातु कार्यालय, मध्य रेल, परेल

समर रस (ग्रीष्मकालीन भीड़)

वी.कु.यादव

हर वर्ष की तरह, इस वर्ष भी
समर रस की व्यवस्था हेतु,
हमारी ड्यूटी कुर्ला टर्मिनस लगा दी गई
मई माह की तारीख थी
घोर उमस व तपिस थी
दोपहर बारह बजे हम स्टेशन पहुंचे
वहां विचित्र नजारा था
हर प्लेटफार्म पर यात्रियों का हुजूम था
ऐसा लगा जैसे किसी मेले या कार्निवाल में आए हों
सुबह से ही बच्चे, नौजवान,बूढे व महिलाएं
कतार लगाए थे
कुछ खड़े, कुछ बैठे व अलसाये थे
रात्रि गाड़ी जाने में वक्त बहुत था
किसी को सुलतानपुर तो किसी को इलाहाबाद या वाराणसी जाना था
छोटे बच्चे आपस में क्रिकेट व ऑख मिचौली खेल रहे थे
नवयुवक अपने हम उम्र संग बातों में मशगूल थे
तो कुछ अपनी महबूबाओं के साथ मोबाइल पर बात में तल्लीन थे
बुजुर्ग लोग पान चबाए ग्रुप में ऐसे बैठे थे जैसे चौपाल में पंचायत बैठी हो
चूंकि सभी घर से जल्दी निकले थे,
और रेल प्रशासन द्वारा सभी सुविधाएं प्लेटफार्म पर उपलब्ध थी
जैसे बिजली पंखा, प्याऊ व स्टाल तथा
सुरक्षा की भी पूरी व्यवस्था थी
सभी ने बारी-बारी उसका उपभोग किया
व रेल प्रशासन की उत्तम व्यवस्था की तारीफ के कसीदे गढ़े
कुछ महिलाओं व पुरूषों ने प्लेटफार्म को ही, स्नानागार बना डाला
यहां भी महिलाओं ने नारी शक्ति का प्रयोग किया
और सूखने हेतु अपनी साड़ी बैंच पर ही डाली
पुरूष भी कहां थे पीछे रहने वाले बिना शर्म बिना इजाजत उन्होंने भी
अपनी लगोंट धोती पर ही डाली,
धीरे-धीरे माहौल खुशनुमा व शादी ब्याह
जैसा हो रहा था ।
कुछ महिलाओं ने समय की उपलब्धता को देखते हुए
निकट भविष्य में गांव में होने वाली शादी की कुछ रस्में
प्लेटफार्म पर ही पूरी कर डाली,

हंसी-हंसी में आपस में एक दूसरे,
को आलता व मेंदी रच डाली
निरीक्षण करते हुए हम और आगे बढ़े
तो विचित्र नजारा देखा
एकांत में प्लेटफार्म के एक छोर पर
मेरा नाऊ-रफीक बैंच पर बैठा कर
यात्रियों की हजामत बना रहा था
हमने टोका-बिना इजाजत गैर कानूनी काम
प्लेटफार्म पर कैसे
पहले सकुचाया फिर धीरे से बोला
हुजुर आप तो जानते हैं
हम भी आज ही गांव जा रहे हैं
बच्चे व बीबी को गांव वालों के साथ
कतार में लगा आए हैं
साथ ही दरोगाजी को सलामी भी
कर आए हैं
सुबह से दाढ़ी हजामत बनाते बनाते
अपने परिवार का मुंबई से
आने जाने का खर्चा तो
मुश्किल से निकाल पाए हैं
अब तक वक्त काफी गुजर गया था,
थोड़ी ही देर में उदघोषणा हुई कि
बनारस जाने वाली गाड़ी प्लेटफार्म क्रमांक 3 पर आ रही है ।
इसकी शीघ्र प्रतिक्रिया हुई
जो सोए थे उठ बैठे
जो बैठै थे व सुस्ता रहे थे
आंखे मलते हुए परिवार के सदस्यों साथ कतार में हो लिए
खाली गाड़ी के प्लेटफार्म पर लगते ही
एक हवलदार आया
कड़क आवाज में हुक्म सुनाया
साथ ही एक बार डंडा हवा में लहराया
दुबारा जमीन पर खड़काया व
तीसरी बार तो कोच पर ही दे मारा और बोला
सभी यात्री कतार में खड़े हो जाए
कोच का ताला, बड़े साहब (दरोगा) के
आने के बाद ही खुलेगा

उसके पश्चात ही बारी-बारी प्रवेश मिलेगा ।
इतना सुनते ही कुछ महिलाएं हड़बड़ाई
और तुरंत अपने-अपने मर्दों को व बच्चों को गुहार लगाई
जो उपलब्ध न थे
उनको मोबाइल काल लगाई
साथ-साथ सिर पर पेटी व
बगल में पोटली फंसाई
मर्दों ने भी कमर कस
अपनी अंगुली बच्चों को पकड़ाई
इतने में ही एक दरोगा ने
दो हवलदारों के साथ
अनारक्षित कोच के बाहर खड़ा हो अपना हुक्म सुनाया
कतार शीघ्र लगा लें
कतार बिना प्रवेश ना मिलेगा
संयम बरते, सहज हो कर
एक-एक कर आगे बढ़े
इसी बीच कोच का मध्य दरवाजा खुला
एक हवलदार कोच के अंदर खड़ा हो
भीतर आने वाले यात्रियों को एक को दायी ओर
व दूसरे को बाएं और जाने के निर्देश दे रहा था
तथा मौके की नजाकत देखते हुए सलामी भी ले रहा था
बाहर खड़ा हवलदार भी अति उत्साहित था,
अपने कार्य की निष्ठा में कुछ ज्यादा ही बह गया
जब किसी महिला की बारी आई
तो उसे स्वयं अपने हाथों कोच में चढ़ा रहा था
जैसे ही मर्द आया, उसे देख
गुर्राया व बोला
क्योंबे मुशटण्डे भगवान ने दो-दो
हाथ दिए हैं देखता क्या है
एक से हैण्डिल पकड़ दूसरे से सामान
इतना कहते ही पीछे से डंडे से भीतर ठेल मारा
यही क्रम, चारों अनारक्षित कोच भरने तक जारी रहा,
प्रक्रिया पूरी होने पर हम जो प्लेटफार्म पर खड़े-खड़े देख रहे थे

दरोगा के पास आए और बोले–
समर रस क्लीयर करने में आपकी टीम ने

बहुत सुंदर काम किया है
यह बात हम आपके उच्च अधिकारियों तक बताएंगे
आपको नकद नहीं तो प्रशंसा पत्र तो
जरूर दिलवाएंगे
साथ में आपकी सलामी वाली बात भी नहीं छुपाएंगे
इतना सुना तो
दरोगा कुछ सकुचाया
पास आया और तुरंत एक हवलदार को बोला
साहब के लिए ठंडा लाओ
और हमें भी तुरंत सलाम कर डाला।

वरिष्ठ सांख्यिकीय एवं विश्लेषण अधिकारी,
सांख्यिकीय शाखा, महाप्रबंधक कार्यालय,
मध्य रेल, मुंबई छशिट

अभी जितनी ही भाषाएं भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा ही सर्वत्र प्रचलित है। इसी हिंदी को यदि भारतवर्ष की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज ही में यह एकता सम्पन्न हो सकती है ।

केशवचन्द्र सेन

आधी-अधूरी अनकही नज्में.....

विजय गौतम

आधे-अधूरे ख्यालों से बनी,
कुछ अनकही नज्में बिखरी हुई है, हर तरफ ।
कुछ जो तेरे आने से उभरी थीं,
और कुछ जो तेरे जाने से जाती नहीं ।

दबा दी थी दिल मसोसकर,
या फेंक दी थी, मायूस होकर, यहां-वहां
कुछ छुप गई थी किवाड़ की ओट में,
झांकती रहती हैं, परदे के पीछे से

कुछ नज्में अटकी हुई हैं, रोशनदान के जालों में,
कमबख्त, नई रोशनी आने भी तो नहीं देती ।
कुछ लिपट गई हैं, रूमाल के कोने पे उकेरे हुए नाम से,
कुछ पसर सी गई हैं, एल्बम के सफ्हों पे,
धुंधले होते रंगों को बार-बार नया सा कर देती हैं ।

मैं हर बार इस कोशिश में हूं कि खत्म कर दूंगा ये सिलसिला,
हर बिखरी हुई नज्म ढूंढ़-ढूंढ़ कर,
रात भर, झोंकता रहता हूं
जिस्म के अलाव में,
लेकिन कुछ अधजली नज्में अब भी बाकी हैं ।
शायद फूंकना पड़ेगा खुद को
ताकि धूं-धूं हो जाएं,
तेरी मेरी, आधी-अधूरी अनकही नज्में
हमेशा हमेशा के लिए....

सहायक मंडल विद्युत इंजीनियर
(टीआरएस), अजनी लोको शेड, मध्य रेल,
नागपुर मंडल

तरूणी की सगाई

पी.डी. तिवारी (संदेश)

जब कहीं गूंजती है शहनाई
साथ में होती है रोशनाई
कुंवारी बाला लेती है अंगड़ाई
अबके साल हमारी बारी आई
हो जाउंगी मायके से पराई
इसमें क्या हैं ...बुराई
सनातन रीति चली आई
ऐसी जननी ने शिक्षा दिलाई
अचानक ! मुंह से चीख निकल आई
ऐसा लगा जैसे किसी आकृति ने
झटपट दियासलाई जलाई
और पड़ौसियों ने आग बुझाई
तरूणी ने मन की भरी खाई
निश्चय, मेरी न गूंजेंगी शहनाई
क्यों व्यर्थ में जिंदगी जाए गंवाई
इससे तो बेहतर है तन्हाई
उससे न मिलन है न जुदाई
जिंदगी चले जैसी जाय चलाई
साजन को मांग भरना न आई
हमने तो लोक लाज खूब बचाई
अब हो रही उनकी जग हंसाई
लगता है जमाने पर चढ़ आई
हैवानियत की राक्षसाई
जिनकी थी पांव पराई
उन्हीं को हथकड़ी लगवाई
उसने फेंक दी रजाई !!
कमरे से बाहर निकल आई
जमकर मां को चिल्लाई
मुझे मत करना मां पराई
न ही मैंने मेंहदी है रचाई
न ही मैंने मांग है भराई
मां की जवां भर्रायी
अस्फुट सा बोल, बोल पाई
जो तरूणी ही समझ पाई
जो तरूणी ......

सहायक मंडल बिजली इंजीनियर,
(क.वि.) आमला, मध्य रेल, नागपुर मंडल

खुशी और सफलता

संजय वि. रानडे

खुशी के लिए काम करेंगे तो खुशी नहीं मिल सकती है ।
लेकिन खुश होकर काम करेंगे तो खुशी और सफलता दोनों जरूर मिलेगी ।

रिश्ते खून के नहीं, रिश्तें एहसास के होते हैं और अगर
एहसास हो तो अजनबी अपने होते हैं।
अगर एहसास न हो तो अपने भी अजनबी हो जाते हैं ।

कोई टूटे तो उसे संभालना सीखो, कोई रूठे तो उसे मनाना सीखो।
रिश्तें तो मिलते हैं मुकद्दर से, बस उसे खूबसूरती से निभाना सीखों ।

31 राज्य, 1618 भाषाएं, 6400 जातियां, 6 धर्म, 6 धार्मिक तत्व, 29 बड़े त्यौहार और
एक देश भारतीय होने पर गर्व करों । हां मैं भारतीय हूं ।

आज का दिन बीते कल के टूटे टुकड़ों से शुरू न करें ।
यह आप का आज निश्चित रूप से नष्ट करेगा और
आने वाला कल बिगाड़ देगा ।

स्वस्थ्य जीवन को आगे बढ़ाने के लिए -
कल तुम्हें जिन्होंने ठुकराया था उन्हें भूल जाइए और
जो तुम्हें आज भी चाहते हैं उन्हें याद कीजिए ।

सहायक सांख्यिकीय एवं विश्लेषण अधिकारी
सांख्यिकीय शाखा, महाप्रबंधक कार्यालय,
मध्य रेल, मुंबई छशिट

वर्णक्रम लेखी विश्लेषक (स्पेक्ट्रोमीटर) का धात्विक परीक्षण में महत्व

बी.बी. हेडाउ

वर्णक्रम लेखी विश्लेषक, धात्विक पदार्थों में उपस्थित तत्वों (एलिमेंट) की मात्रात्मक रासायनिक विश्लेषण को निर्धारित करने की एक आधुनिकतम तकनीक है ।

प्रकाशीय उत्सर्जन वर्णक्रम लेखी विश्लेषक (ऑप्टिकलइमिशन स्पेक्ट्रोमीटर) तकनीक में नमूने पर चिनगारी (स्पार्क) उत्पन्न की जाती है तथा उससे नमूने में उपस्थित तत्वों की सही प्रतिशतता की जानकारी प्राप्त होती है ।

इस तकनीक में आविष्कार के पूर्व नमूनों को विभिन्न रसायनों द्वारा अभिक्रिया (रिएक्शन) करा कर प्रत्येक तत्व की प्रतिशत मात्रा को निकाला जाता था जो कि आज भी प्रचलित है । इस प्रकार की परीक्षण विधि को भारात्मक (ग्रेवीमेट्रिक) एवं आयतनात्मक (वोल्युमेर्टिक) अनुमापन द्वारा संपादित किया जाता है जिसे "वेट एनाइसिस" कहते हैं ।यह विधि श्रमसाध्य है एवं ज्यादा समय लेती है ।

चिनगारीयुक्त प्रकाशीय उत्सर्जन वर्णक्रम लेखी विश्लेषक द्वारा ठोस धातुओं के नमूनों का सीधा विश्लेषण हो जाता है । इस विधि में नमूने के लगभग 1 से 2 वर्ग सेन्टीमीटर क्षेत्रफल को अच्छी तरह से साफ एवं समतल करके मशीन द्वारा चिनगारी उत्पन्न कर मात्रात्मक रसायनिक विश्लेषण को संपादित किया जाता है । मशीन में एक इलेक्टोंड होता है जो केथोड की भांति कार्य करता है तथा नमूने की सतह एनोड की भांति कार्य करती है । प्रज्वलन कक्ष (इगनिशन चेम्बर) में आर्गन गैस भरने के बाद उच्च ऊर्जा युक्त चिनगारी उत्पन्न की जाती है । इस कारण आर्गन गैस पहले आयनीकृत होता है उसके बाद चालकीय प्लाज्मा में बदल जाता है। जिस जगह चिनगारी उत्पन्न होती है उस जगह के नमूने की सतह के परमाणु उत्तेजित होकर वाष्पीकृत हो जाते है । जब यह उत्तेजित अवस्था वाले परमाणु अपने कम ऊर्जा वाली मूल अवस्था में वापस लौटते हैं तब वह ऊर्जा निष्काषित करते है। अलग-अलग तत्वों के परमाणुओं द्वारा निष्काषित होने वाली ऊर्जाओं की तरंग-दैर्ध्य (वेवलेन्थ) अलग-अलग होती है । प्रकाशीय उत्सर्जन वर्णक्रम लेखी इन्हीं तरंग-दैध्यों की पहचानकर पदार्थ में उपस्थित तत्वों की प्रतिशतता बताता है।

यह परीक्षण प्रक्रिया इस उपकरण द्वारा कुछ ही सेकेण्ड में पूर्ण हो जाती है।

किसी भी पुर्जे को सेवा में लेने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि उसके रासायनिक संघटन उनके संबंधित आयएस/वीएस/एएसटीएम/एआईएसआई/आरआरएस

स्पेसीफिकेशन के अनुसार है अथवा नहीं । इसी प्रकार विफल अवयवों/पुर्जों का रासायनिक विश्लेषण, विफलता अन्वेषण को जानने के लिए भी किया जाता है जिससे यह पता चल सके कि विफलता कहीं अवयवों/घटकों के रसायनिक संघटन के कारण तो नहीं है ।

रासायन एवं धातु प्रयोगशाला, लोको कारखाना, परेल, मध्य रेल की मुख्य प्रयोगशाला है तथा इस प्रयोगशाला में विभिन्न धात्विक घटक/पदार्थ गुणवत्ता-नियंत्रण, गुणवत्ता आश्वासन तथा विफल पुर्जो की धातुकर्मिक अन्वेषण हेतु भिन्न-भिन्न भंडार डिपो, मंडलों, शेडस एवं कारखानों से रासायनिक विश्लेषण के लिए प्राप्त होते हैं जिनका मात्रात्मक विश्लेषण वर्णक्रम लेखी विश्लेषक द्वारा किया जाता है ।

रासायनिक एवं धातु-प्रयोगशाला, परेल में उपलब्ध सीधे पढ़े जाने वाले ऑप्टीकल उत्सर्जन वर्णक्रम लेखी जर्मन निर्मित है तथा इस मॉडल का नाम फाउंड्री मास्टर है । यह उपकरण निम्नलिखित लोह एवं अलोह धातुओं एवं मिश्र धातुओं के विस्तृत विश्लेषण करने हेतु सक्षम है जिनके परिणाम प्रतिशत मात्रा में सीधे प्रदर्शित होते हैं ।

1. एल्यूमिनियम, स्टील, कॉपर एवं उनके मिश्रधातु (एलाय)
2. स्टेनलेस स्टील एवं कास्ट आयरन
3. औजार हेतु उपयोगी स्टील (टूल स्टील)

सुविधा :

1. परीक्षण में समय कम लगता है ।
2. पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता है ।
3. कम श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है ।

उप मुख्य रसायन एवं धातु विज्ञानी कार्यालय,
लोको काखाना,मध्य रेल, परेल

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी,उतनी दूसरी चीज से नहीं ।

सुभाषचन्द्र बोस

घरोंदा

अशोक ई. जोहरे (साहिल)

टूट गया सपना

जो सजाया था मैंने ।।

बिखर गए मोती,

जो पिरोये थे मैंने ।।

पक्षी बन उड़ता रहा अकेला,

अपने घरोंदें को उजड़ते देखा मैंने ।।

मन के शीश महल को

पत्थरों से चूर होते देखा मैंने ।।

उजालों की राह पर चले,

आंधी से चिरागों को बुझते देखा मैंने ।।

बेवफा का मासूम चेहरा न जाना,

गम को हंसी में छुपाया हमने ।।

उनकी डोली के फूलों से,

मेरी अर्थी को सजाया उनके चाहने वालो ने ।।

कश्ती डूबने लगी तूफानों में,

कहीं दूर ''साहिल'' न देखा हमने ।।

तलाश

साथ चलकर जो, साथ छोड़ दें,
उनके लिए हम, अपनी आरज़ू भुला दें ।।
कस्में खाकर जो वादा तोड़ दें,
उनकी यादों को, क्यूं नहीं हम भुला दें ।।
सपने दिखाकर जो हमें भूल गए,
गीत सरगम के पहले उन्हें सुना दें ।।
वफा की चाहत से, उन्हें अपना कर दें,
लहू से उनका नाम, दिल की दिवारों पर लिख दें ।।
उनकी राहों पर, वफा के फूल खिला दें,
जिन्दगी भर चाहा तुझे, अब तो दवा पिला दे ।।

दिल में जख्म है जहर से धोने दे
उनकी तलाश में दुनियां छोड दें ।।
मेरे दिल में है, चाहतों का समंदर,
डर है हमसफर का ''साहिल'' पे कश्ती न डुबो दे ।।

तकनीशियन - II/एसआर-II
कर्षण मशीन कारखाना, नासिक रोड, मध्य रेल

क्षमता

रामचरण यादव "याददाश्त"

बेकार की बात पर तकरार नहीं करता
सेवा चाहे जैसी भी हो इंकार नहीं करता

जान भले ही चली जाए, दोस्तों की खातिर
पर शत्रुओं का कभी मैं, सत्कार नहीं करता

देशभक्त और भगवान के आगे शीश झुकाउंगा
किसी गैर के आगे झुकना, स्वीकार नहीं करता

बेचने लगे बाजार में, लोग ईमान आजकल
मैं प्रेम के अलावा दूसरा, व्यापार नहीं करता

ईश्वर के अहसान गिना करता हूं रात दिन मैं
ये अलग बात है कि पूजा, हर बार नहीं करता

कोई आज तक ऐसा न मिला ,जिसे मैं अपना सकूं
यह कथन सरासर गलत है, कि मैं प्यार नहीं करता

बहुत होशियार हो गया है, लोगों का दिल दिमाग
झूठे वादों पर हमेशा कोई, एतबार नहीं करता

अन्याय से लड़ने की क्षमता, भले मुझ में न हो
अंतिम घड़ी तक नीति धर्म का, बहिष्कार नहीं करता

अपनी आदत से मजबूर है, इसीलिए तो शायद
स्वार्थी लोगों को यादव कभी, नमस्कार नहीं करता

प्रधान संपादक - नाजनीन
सदर बाजार बैतूल (म.प्र.)

रेल इंजन (डब्ल्यू.डी.एस.6)

श्याम सुंदर त्रिपाठी

मैं भारतीय रेल का इंजन हूं, सबका करता अभिनंदन हूं ।
भारत में जन्म हुआ मेरा, भारतीय कहलाता हूं ।।
जनसेवा में तत्पर, लौहपथ पर चलता जाता हूं ।
नाम मेरा डब्ल्यूडीएस 6 लोको कारखाना, परेल मुंबई का सृजन हूं ।।
मैं भारतीय रेल का इंजन हूं, सबका करता अभिनंदन हूं ।1।

तेरह सौ पचास घोड़ों की ताकत मुझ में, पेट भारी भरकम है ।
एक सै छब्बीस टन वजन मेरा, मुझ में भारी दम है ।।
मौसम का परवाह नहीं, कभी न करता क्रंदन हूं ।
मैं भारतीय रेल का इंजन हूं, सबका करता अभिनंदन हूं ।।2।।

तेरह फीट ऊंचाई मेरी, दस फीट चौड़ा सीना है ।
छप्पन फीट लंबाई मेरी, परहित में तो जीना है ।।
पांच हजार लीटर डीजल, पांच सौ तीस लीटर पानी से सदा रहता मगन हूं ।
मैं भारतीय रेल का इंजन हूं, सबका करता अभिनंदन हूं ।।3।।

बिना बोझा जब भी मैं चलता सत्र लीटर डीजल घंटों में पीता हूं ।
बोझा जब लादा जाए, तब और बढ़ाके पीता हूं ।।
ढाई लीटर गवर्नर ऑयल, आठ सौ लीटर ल्यूब ऑयल से चलने में मैं टन हूं ।
मैं भारतीय रेल का इंजन हूं, सबका करता अभिनंदन हूं ।।4।।

तकनीशियन
डब्ल्यू.डी.एम.2 शाप,
लोको कारखाना, मध्य रेल, परेल

दुखी हवा का झोंका

श्रीराम एम. बरेठा

सड़क सहारे रेल किनारे
बैठो मत ले लोटा, कहे दुखी हवा का झोका

कुछ लोग सवेरे सैर करें
कुछ खुले में बैठे शौच करें
इन्हें शर्मोहया ने नहीं रोका, कहे दुखी हवा का झोका

जीवन रेखा रेल है प्यारे
गंदा करो ना ट्रेक किनारे
सफर हो सबका चोखा, कहे दुखी हवा का झोका

माना मजबूरी महान है
पर हम जानवर नहीं इंसान हैं
कुछ तो परदे में होता, कहे दुखी हवा का झोका

स्वच्छ हो जीवन उच्च विचार
इंसानों सा हो व्यवहार
सुख दुख कायम कभी न होता, कहे शुद्ध हवा का झोका

प्रवर लिपिक
मुख्य यांत्रिक इंजीनियर कार्यालय
मध्य रेल, मुंबई छशिट

रचनाकारों से अपील

- रेल सुरभि में अपनी स्तरीय रचनाएं भिजवाएं ।
- रचनाएं डबल स्पेस में टंकित करवाकर भिजवाएं ।
- अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएगी ।
- रचनाओं की मूल प्रति अपने पास ही रखे ।
- पत्रिका के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव पत्र अथवा ई-मेल द्वारा भेजें ।

वेब अपलोडिंग : श्री एस.एस.बरडे, सहायक मंडल सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर, मुंबई मंडल एवं उनके सहयोगी कर्मचारी

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मध्य रेल मुंबई की दिनांक 17.06.2013 को आयोजित 141 वीं बैठक के छायाचित्र

केवल निशुल्क वितरण के लिए